ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 14 अंक 32 कुल पृष्ठ-8 30 मई से 5 जून, 2019 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853120 सम्वत् 2076 ज्ये. कृ.-10

आर्य कन्या पाठशाला इण्टर कॉलेज खुर्जा (उ. प्र.) में

कन्या चरित्र निर्माण एवं योग प्रशिक्षण शिविर भव्यता के साथ सम्पन्न

शिविर में भाग लेने वाली कन्याओं ने दिखाये आश्चर्यजनक कौशल एवं कार्यक्रम

नारी जाति पर महर्षि दयानन्द सरस्वती के उपकारों को भुलाया नहीं जा सकता

– स्वामी आर्यवेश

बेटियों को संस्कारित करने के लिए प्रतिवर्ष शिविर आयोजित किया जायेगा

– डॉ. धीरज सिंह

माता ही बच्चे का निर्माण करने वाली होती है

– पूनम आर्या

बेटी बचाओ अभियान आर्य समाज ने ही शुरू किया

– प्रवेश आर्या

22 से 28 मई, 2019 तक आर्य कन्या पाठशाला इण्टर कॉलेज, खुर्जा ने कन्या चरित्र निर्माण एवं योग प्रशिक्षण शिविर का भव्य आयोजन आर्य समाज बलदेव आश्रम खुर्जा एवं आर्य कन्या पाठशाला के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। इस शिविर का संयोजन इण्टर कॉलेज की प्रधानाचार्या श्रीमती शशिबाला ने किया तथा संरक्षण कॉलेज के प्रबन्धक एवं आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के प्रधान डॉ. धीरज सिंह ने किया। शिविर की व्यवस्था का दायित्व इण्टर कॉलेज की समस्त अध्यापिकाओं एवं आर्य समाज के पदाधिकारियों ने मिलकर संभाला। शिविर में प्रशिक्षण एवं अनुशासन का समायोजन आर्य समाज की विदुषी बहन प्रवेश आर्या राष्ट्रीय संयोजक बेटी बचाओ अभियान एवं बहन पूनम आर्या राष्ट्रीय अध्यक्ष बेटी बचाओ अभियान ने अपना पूरा समय देकर बड़ी ही कुशलता के साथ किया। शिविरार्थी कन्याओं को शारीरिक प्रशिक्षण देने के लिए बेटी बचाओ अभियान की योग्य कार्यकर्ता सुश्री प्राची आर्या, एकता आर्या एवं पूनम आर्या ने अपना पूरा समय देकर अत्यन्त थोड़े समय में कन्याओं को विविध शारीरिक क्रियाएं सिखाकर उन्हें निपुण बनाया। शिविर के दौरान बहन पूनम तथा बहन प्रवेश आर्या के व्याख्यान तथा बौद्धिक कार्यक्रम निरन्तर चलते रहे जिससे सभी शिविरार्थी कन्याएँ अत्यधिक प्रभावित हुई। शिविर की विशेषता यह रही कि इसमें कई मुस्लिम परिवारों की कन्याओं ने भी भाग लिया तथा शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त करके अपने आपको आर्य वीरांगना के विशेषण से अलंकृत किया।

शिविर के समापन समारोह में 28 मई, 2019 को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। उनके अतिरिक्त इसी आर्य कन्या इण्टर कॉलेज की छात्रा रहीं वर्तमान में ए.डी.जे. (अतिरिक्त जिला जज) मथुरा श्रीमती चंचल विशिष्ट अतिथि के रूप में समारोह में सम्मिलित हुई। समापन समारोह का मंच संचालन बहन प्रवेश आर्या ने बड़ी कुशलता के साथ किया। सर्वप्रथम शिविर में भाग लेने वाली कई छात्राओं ने शिविर सम्बन्धी अपने संस्मरण सुनाकर उपस्थित श्रोताओं को अत्यधिक प्रभावित किया। इन छात्राओं ने बताया कि उन्हें शिविर की दिनचर्या तथा कार्यक्रम के बारे में पहले कुछ भी मालूम नहीं था और शिविर में आने तथा भाग लेने में उनकी रुचि बिल्कुल भी नहीं थी। किन्तु यहाँ आने के बाद हमारी बड़ी दीदी प्रवेश तथा पूनम आर्या ने बौद्धिक ज्ञान के द्वारा अत्यधिक प्रभावित किया और आज हम यह अनुभव करती हैं कि यदि शिविर में हम नहीं आते तो जीवन का एक अत्यन्त स्वर्णिम अवसर हमारे हाथ से निकल जाता। अब हमने निश्चय किया है कि हम प्रतिदिन जल्दी उठकर योगासन एवं व्यायाम किया करेंगे तथा प्रतिदिन ईश्वरोपासना के लिए संन्ध्या एवं ध्यान अवश्य ही करेंगे। इन छात्राओं ने ये भी कहा कि अपने जीवन में आज पहली बार ऐसे सार्वजनिक मंच पर बोलने के लिए खड़ी हुई हूँ जहाँ इतने बड़े–बड़े विद्वान और अनुभवी लोग उपस्थित हैं, यह शिविर का ही प्रभाव है कि आज हमारे अन्दर इतना आत्मविश्वास आ गया है जो हम बेहिचक अपनी बात इस मंच से कह रही हैं। इन छात्राओं ने बहुत सुन्दर गीत भी सुनाये।

एक मुस्लिम छात्रा ने अपना संस्मरण सुनाते हुए कहा कि इन दिनों रोजे चल रहे हैं। हमें भी घर में और सदस्यों के साथ रोजे रखने थे, मेरी माँ ने मुझे बहुत कहा कि रोजे छोड़ना ठीक नहीं होता और तुम्हें शिविर में नहीं जाना चाहिए, किन्तु मेरा आग्रह वह टाल नहीं सकीं और मैं शिविर में आ गई। आज मैं यह महसूस करती हूँ कि रोजे रखने से कहीं अधिक लाभकारी मेरे लिए इस शिविर में भाग लेना रहा। छात्राओं के संस्मरण सुनाने के पश्चात् विशिष्ट अतिथि श्रीमती चंचल जी ने कहा कि आज मैं जिस पद पर कार्य कर रही हूँ वहाँ तक पहुंचने में मेरे विद्यालय की अध्यापिकाओं प्रिंसिपल महोदया तथा विद्यालय के प्रबन्धक महोदय का विशेष योगदान है।

मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम में उपस्थित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने उद्बोधन में जोर देकर यह कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा नारी जाति पर किये गये उपकारों को हम कभी भुला नहीं सकते। उन्होंने कहा कि बड़े–बड़े धर्मगुरुओं ने और समाज के जिम्मेदार लोगों ने **स्त्रीशूद्रौ नाधीयाताम्।** के अनुरूप स्त्रियों एवं शूद्रों को पढ़ने–लिखने के अधिकार से वंचित कर दिया था। धर्मगुरु अधिकार पूर्वक घोषणा करते थे कि स्त्रियों और शूद्रों को पढ़ने का अधिकार नहीं दिया जा सकता। यदि स्त्रियाँ वेद मंत्र पढ़ लें तो उनकी जिह्वा काट ली जाये। वेद मंत्र देख लें तो उनकी आंखों में नीला थोथा भर दिया जाये और यदि वेद मंत्र सुन लें तो उनके कान में रांगा भर दिया जाये। ऐसे भयंकर आदेश धर्म के क्षेत्र से दिये जा रहे थे। ऐसे समय में युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने बड़ी मजबूती के साथ घोषित किया कि वेद के इस मंत्र **यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभयः।** के अनुरूप प्रत्येक स्त्री और पुरुष को वेद की कल्याणी वाणी को बोलने, सुनने का अधिकार है जो उन्हें परमात्मा ने दिया है। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि जिस मातृशक्ति के ऊपर बच्चे के निर्माण का सबसे बड़ा दायित्व है उसे ज्ञान से रहित रखना, पढ़ाई–लिखाई से वंचित रखना, वेद मंत्र सुनने, देखने तथा बोलने से रोकना न केवल अन्याय है बल्कि समाज में पीछे धकेलने के बराबर है। यदि माता ही शिक्षित तथा विदुषी नहीं होगी तो वह बच्चे का निर्माण कैसे कर पायेगी। स्वामी आर्यवेश जी ने कन्या भ्रूण हत्या, देहज, महिलाओं पर हो रहे विविध अत्याचार एवं उत्पीड़न के विरुद्ध भी आक्रोशपूर्ण शब्दों

शेष पृष्ठ 4 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

ग्रीष्म कालीन छुट्टियों में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में आयोजित आर्य युवा निर्माण शिविरों का विवरण

1. **राष्ट्रीय आर्य कार्यकर्ता कैप्सूल शिविर**
   दिनांक 20 से 28 जून, 2019
2. **प्रान्तीय युवा चरित्र निर्माण शिविर, हरियाणा**
   दिनांक 1 से 5 जून, 2019
   स्थान – स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली
   संयोजक– ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, मो.–9354840454
3. **राष्ट्रीय कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर**
   दिनांक 6 से 12 जून, 2019
   स्थान – स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली
   संयोजक – प्रवेश आर्या, मो.:–9416630916
4. **कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर**
   10 से 16 मई, 2019
   स्थान–श्री विनायक शोध व प्रशिक्षण संस्थान,
   नायला, जयपुर, राजस्थान
   संयोजक– श्री यशपाल 'यश', मो.–9414360248
5. **आर्य युवा निर्माण शिविर जयपुर**
   14 से 20 जून, 2019 तक
   स्थान–संस्कार भवन, जी. एल. सैनी कालेज
   केसरनगर चौराहा, रामपुरा रोड, जयपुर
   संयोजक– श्री यशपाल 'यश', मो.–9414360248
6. **आर्य युवा निर्माण शिविर पलवल**
   आर्य समाज जवाहरनगर, पलवल, हरियाणा
   संयोजक–स्वामी श्रद्धानन्द, मो.–9416267482
7. **आर्य कन्या चरित्र निर्माण व योग शिविर**
   22 से 28 मई, 2019
   आर्य कन्या पाठशाला, खुर्जा, बुलन्दशहर, उ. प्र.
8. **आर्य युवा निर्माण शिविर मध्य प्रदेश**
   29 मई से 2 जून, 2019
   स्थान–सिहोर, मध्य प्रदेश
   सम्पर्क–डॉ. लक्ष्मणदास आर्य, मो.–9425133481
9. **आर्य युवा निर्माण एवं बौद्धिक शिविर चम्बा**
   2 से 5 मई, 2019
   स्थान–दयानन्द मठ चम्बा, हिमाचल प्रदेश
10. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    गावँ जाजवान, जिला जींद
    20 मई से 26 मई 2019
    संयोजकः– राजपाल आर्य
11. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    आर्य स्कूल, गंगाना, सोनीपत
    22 से 29 मई 2019
    संयोजकः– बलराम आर्य
12. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
    बिसवां मील, सोनीपत
    23 से 30 मई 2019
    संयोजकः– आचार्य प्रवीण आर्य
13. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    दून वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सोनीपत
    7 से 13 जून 2019
    संयोजकः– अंकित आर्य
14. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    एम डी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, राजौंद,कैथल
    22 से 28 मई 2019
    संयोजकः– डॉ होशियार सिंह आर्य
15. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    जाट स्कूल, कैथल
    25 से 30 मई 2019
    संयोजकः– सत्यवीर आर्य
16. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    गावँ मांडौली खुर्द, जिला भिवानी
    21 से 27 मई 2019
    संयोजकः– अशोक आर्य
17. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    गावँ मांडौली कलां, जिला भिवानी
    21 से 27 मई 2019
    संयोजकः– अशोक आर्य
18. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    गावँ चहड़ कलां, जिला भिवानी
    25 से 31 मई 2019
    संयोजकः– अशोक आर्य

11 जून से 19 जून 2019 के मध्य भिवानी जिले में आयोजित होने वाले शिविर

19. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    गावँ बहल, जिला भिवानी
    संयोजकः– अशोक आर्य
20. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    गावँ सुरपुरा कलां, जिला भिवानी
    संयोजकः– अशोक आर्य
21. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    गावँ गौकुलपुरा, जिला भिवानी
    संयोजकः– अशोक आर्य
22. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    गावँ जुई कलां, जिला भिवानी
    संयोजकः– बाबू लाल आर्य

जींद जिले में 6 जून 19 जून के मध्य आयोजित होने वाले शिविर

23. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    स्वामी इन्द्रवेश व्यायामशाला
    गावँ खटकड़, जिला जींद
    संयोजकः– अशोक आर्य, सोनू आर्य
24. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    गावँ गोइयाँ, जिला जींद
    संयोजकः– धर्मबीर आर्य सरपंच
25. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    गावँ चांदपुर, जिला जींद
    संयोजकः– मनीष नरवाल
26. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    गावँ छातर जिला जींद
    संयोजकः– सूरजमल आर्य पहलवान
27. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    गावँ घोघड़ियाँ, जिला जींद
    संयोजकः– जगफुल ढिल्लों
28. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    गावँ बहलबा, जिला रोहतक़
    संयोजकः डॉ सीसराम आर्य
29. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    गावँ फरमाना, जिला रोहतक़
    संयोजकः डॉ राजेश आर्य
30. **राष्ट्रीय युवा संकल्प समारोह**
    (युवाओं के प्रेरणा स्रोत स्वामी इन्द्रवेश जी की 13वीं पुण्य स्मृति के अवसर पर)
    12 जून, 2019, प्रातः 9 बजे से मध्यान्ह 2 बजे तक
    स्थान – स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली

आधुनिकता की अन्धी दौड़ में गुरुकुलीय शिक्षा की उपादेयता

– प्रा. अरूण माधवराव चह्वाण

आज शिक्षा और संस्कृति दोनों खतरे में है। आधुनिक जीवन की जटिलता मे पिसते दोनों ही दम तोड़ते हुए दिखाई देते हैं। शिक्षा का अर्थ मानव को मानवीय मूल्यों के प्रति संवेदनशील, जागरूक और सक्रिय बनाना है, जो कि आज कहीं पर भी दृष्टिगोचर नहीं हो रहा है। औपनिवेशिक साम्राज्यवादी सांचे-ढांचे में ढली शिक्षा ही हमारा लक्ष्य बन चुकी है। यह शिक्षा मानव और मानव के बीच भेदभाव खड़ी करने वाली व हमें भीतर से तोड़ने वाली बन गई है। आधुनिक शिक्षा ने अपने साध्य में सफल होकर क्षेत्रवाद, अवसरवाद घटिया राष्ट्रवाद, पूंजीवाद, आडम्बरी अध्यात्मवाद की ओर राष्ट्र को धकेलकर बर्बाद कर दिया है।

ब्रिटिश साम्राज्यवादियों ने कभी सिलसिलेवार ढंग से हमारी प्रगति, सम्पत्ति, संस्कृति और शिक्षा का संहार किया था और आज उसी ढंग का क्रांतिकारी परिवर्तन करने का नारा उठता है। पहली कक्षा से ही अंग्रेजी अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाती है। सच पूछो तो यह शिक्षा थोड़े से 'एलिट वर्ग' को लाभ पहुंचाकर अन्य सभी लोगों को ठेंगा दिखाने वाली है। बहुतांश जनता को मूर्ख

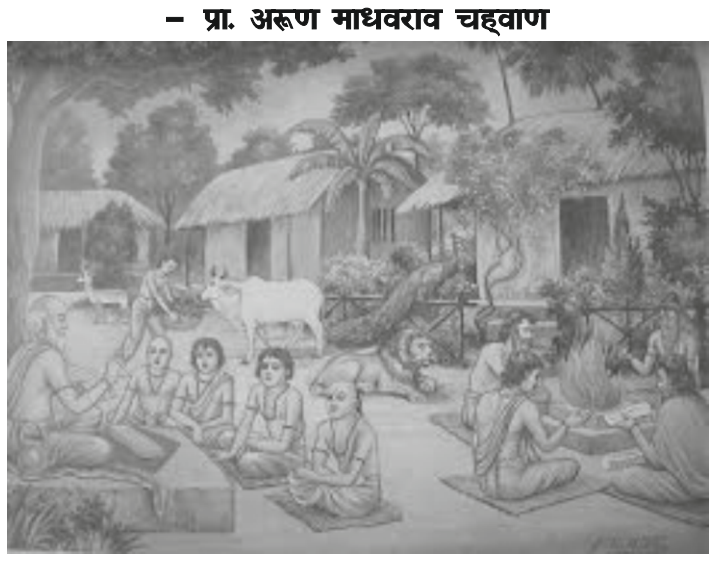

बनाकर अधिक से अधिक धन कैसे कमाया जाए?कैसे बचाया जाये?ये हथकंडे आज की शिक्षा सिखा रही है। परिणामत: हमारे देश में आज इक्कीसवीं सदी में भी समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र आदि का अध्यापन विदेशी आंकड़ेवाले फार्मूले पर चल रहा है।

अंग्रेजी ने जिस शिक्षा का सूत्रपात किया है, उसमें ज्ञान और संस्कार का महत्त्व न होकर पद को निरतिशय महत्त्व प्राप्त हुआ। 'पद', जिसमें अधिकार होते हैं, पीढ़ियां होती हैं, सब जेब भरने के साधन बन गये हैं। इसमें प्रशिक्षण निचली श्रेणी तथा ऊँची श्रेणी का वह बोध होता है, जिसमें महत्त्व व्यक्ति का नहीं सत्ता का होता है। जिसकी शक्ति सताने, दया करने या दूसरों के मां-बाप बनने के दम्भ से आती हैं। यह शिक्षा समाज की अस्मिता को मिटाकर व्यक्तिवाद को जन्म ही नहीं देती, अपितु उसका पोषण व सिंचन करने में ही अपने को धन्य मानती हैं। इसी ढंग में ढलकर शिक्षा एक बाजारू माल और विद्यालय फैक्टरी बन गए हैं। आज शिक्षा खरीदी जाती है, बेची जाती है और इसकी मांग या खपत से इसका मूल्य आंका जाता है। आज हम केवल अंधे होकर पश्चिम की विज्ञान और तकनीकी की शिक्षा हम अपनी नई पीढ़ी को दे रहे हैं। अपने सांस्कृतिक मूल्यों का अवमूल्यन करने में भी हमें कोई हिचकिचाहट नहीं है। नई पीढ़ी केवल और केवल भौतिक विज्ञान तथा तकनीकी शिक्षा के पीछे दौड़ने के कारण संस्कृति का परिचय तक कर नहीं पा रही है। 'अनुकरण' यह किसी भी जाति और देश की मौलिक ढंग से सोचने विचारने की शक्ति का विनाश कैसे कर देता है?इसका उदाहरण हमारी शिक्षा और संस्कृति से अच्छा दूसरा कोई नहीं है। आज हम सभी क्षेत्रों में पश्चिम के अनुकर्ता है। अपने ज्ञान-विज्ञान के प्रतीकों को हीन मानकर हमने छोड़ दिया है। पश्चिम की उपभोक्तावादी संस्कृति हमारे रक्त में भिनने लगी है और यह इस बात का प्रमाण है कि भारतीय संस्कृति अपनी धुरी छोड़कर भारतीय होने की प्रक्रिया पकड़ रही है। लॉर्ड मैकाले ने क्लार्कबाबू पैदा करने वाली शिक्षा और संस्कृति से भारतीयों की सांस्कृतिक अस्मिता को मोड़कर बदलने की जो बात कभी सोची थी, क्या हम उसी सोच को साकार नहीं कर रहे हैं?सभी भारतीय भाषायें आज भी अंग्रेजी के पीछे मुंह लटकाये खड़ी हैं और भारतीय संस्कृति घूरे पर उगा हुआ धतूरा बनकर रह गई है।

ब्रिटिश साम्राज्यवादियों ने चालाकी से चाहा था कि शिक्षा, दर्शन, संस्कृति आदि ज्ञान के सभी क्षेत्रों में भारतीय लोग अंग्रेजों को श्रेष्ठ और अपने को हीन समझें। उस समय उनसे हमारे सम्बन्ध मालिक और नौकर के थे। स्वाधीनता के बाद यह हीन भावना समाप्त होनी चाहिए थी। पर सही शिक्षा नीति और संस्कृति में स्वतंत्रताबोध की कमी के कारण ऐसा नहीं हुआ। आधुनिक पुनर्जागरण काल के हमारे तत्वचिंतक इस खतरे के प्रति लगातार जागरूक थे। इसलिए वे भारतीय ऐतिहासिक सामाजिक परम्पराओं की अर्थव्यवस्था और मूल्य को समझते थे, किन्तु यह चिन्तन की परम्परा स्वाधीनता के पश्चात् आधुनिकता की अन्धी दौड़ में भटक गई। हमने शिक्षानीति में 'सा विद्या या विमुक्तये।' (अर्थात् विद्या वही है जो हमें मुक्त करती है।) इस सिद्धान्त को ही भुला दिया और हम संस्कृति के क्षेत्र में भी 'तेन त्यक्तेन भुंजीथा:।' (त्यागपूर्वक भोग करो) की मानवीय दृष्टि से ही दूर होते जा रहे हैं।

आज भारत को शिक्षा और संस्कृति के रक्षण के लिए अपने प्राचीन वैभव और प्रतिष्ठा को पाने के लिए आधुनिकता की अन्धी दौड़ में शामिल होने की बजाय अस्मिता को बचाए रखने की तथा आमूल शैक्षिक सुधारों की आवश्यकता है। केवल तंत्रशिक्षण यह शिक्षा के मंत्र को भुला न पाए, इसलिए मूल्याधारित शिक्षण की महती आवश्यकता है। मानवीय मूल्यों से रहित शिक्षा के जितने दुष्परिणाम हो सकते हैं, वे सब हम भोग ही चुके हैं अत: शिक्षा में मूल्यों को वरीयता देनी होगी। गुरुकुलीय शिक्षा इसमें अहं भूमिका निभा सकती है, जिसमें मानवीय मूल्यों के साथ-साथ सर्वांगीण विकास का भी पूरा-पूरा ख्याल रखा गया है।

इतना जरूर है कि गुरुकुलीय शिक्षा को समय का तकाजा ध्यान में रखते हुए अपने में कुछ परिवर्तन करने होंगे। पश्चिम की तंत्र शिक्षा पद्धति को भारतीयता के अनुरूप ढालकर वैदिक ज्ञान-विज्ञान का प्रसार करने के लक्ष्य को लेकर गुरुकुलीय शिक्षा समाज का और जगत् का बड़ा उपकार कर सकती है और आने वाले कुछ ही समय में यह होकर रहेगा, इतना तो विश्वास गुरुकुल की ज्योति बचाये रखने वालों पर किया ही जा सकता है।

– अनुव्रतसदनम्' 1080, शारदानगर, परली-वै.,
मो.-9890355349, वैदिक गर्जना से साभार

जहां नहीं होता कभी विश्राम ॥ ओ३म् ॥ आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

हर राहे गुजर पर शमां जलाना है मेरा काम, हवा का रूख क्या है मैं देखता नहीं...

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् का युवा निर्माण

मातृ पितृ भक्त, ईश्वर भक्त, देशभक्त, चरित्रवान युवा पीढ़ी के निर्माण का अभियान

1. राष्ट्रीय युवक चरित्र निर्माण शिविर
शनिवार 8 जून से रविवार 16 जून 2019 तक
स्थान : ऐमिटी कैम्पस, सेक्टर-44, नोएडा
सम्पर्क: प्रवीन आर्य-9911404423, अरुण आर्य-9818530543

2. दिल्ली आर्य कन्या चरित्र निर्माण शिविर
रविवार 19 मई से रविवार 26 मई 2019 तक
स्थान: गीता भारती पब्लिक स्कूल, अशोक विहार-2, दिल्ली
उर्मिला आर्या-9711161843, राजरानी अग्रवाल-9810304300

3. आगरा आर्य कन्या शिविर
सोमवार 3 जून से रविवार 9 जून 2019 तक
स्थान: कृष्णा इण्टरनेशनल स्कूल, महुआ खेड़ा, आगरा
श्री रमाकान्त सारस्वत-9719003853

4. राजस्थान प्रान्तीय युवक निर्माण शिविर
शुक्रवार 14 जून से वीरवार 20 जून 2019 तक
संस्कार भवन, जी.एल. सैनी कॉलेज, केसर नगर चौराहा, रामपुरा रोड जयपुर
सम्पर्क: यशपाल यश, प्रान्तीय अध्यक्ष-9414360248

5. हरियाणा प्रान्तीय युवक निर्माण शिविर
बुधवार 19 जून से रविवार 23 जून 2019 तक
स्थान: आर्य समाज, सेक्टर-6, करनाल
स्वतन्त्र कुकरेजा-9813041360, अजय आर्य-9416128075, रोशन आर्य-9812020862

6. पलवल युवक निर्माण शिविर
सोमवार 3 जून से रविवार 9 जून 2019 तक
स्थान: आर्य समाज, जवाहर नगर, पलवल, हरियाणा
सम्पर्क: स्वामी श्रद्धानन्द जी-9416267482

7. कैथल युवक निर्माण शिविर
बुधवार 5 जून से बुधवार 12 जून 2019 तक
स्थान: आर्य विद्यापीठ स्कूल, पबनावा, जिला कैथल
सम्पर्क: आचार्य राजेश्वर मुनि-9896960064, कमल आर्य 9068058200

8. राष्ट्रीय शिक्षक अभ्यास शिविर
शुक्रवार 3 मई से रविवार 5 मई 2019 तक
स्थान: गुरुकुल ग्राम खेड़ाखुर्द, दिल्ली-110082
सम्पर्क: सौरभ गुप्ता-9971467978, सूर्यदेव आर्य-9416715537

9. मध्य प्रदेश प्रान्तीय युवक निर्माण शिविर
सोमवार 20 मई से रविवार 26 मई 2019 तक
स्थान: कलोता विद्यापीठ, जलोदा, पंथ, देवालपुर, इन्दौर
सम्पर्क: आ. भानुप्रताप वेदालंकार-09977967777

10. उत्तराखण्ड योग-आयुर्वेद-प्राकृतिक चिकित्सा शिविर
मंगलवार 4 जून से रविवार 9 जून 2019 तक
स्थान : गुरुकुल कण्वाश्रम, कोटद्वार, पौढ़ी गढ़वाल
सम्पर्क: ब्र. विश्वपाल जयन्त-09837162511, संजय रावत-9084724491

11. जम्मू-कश्मीर युवक निर्माण शिविर
सोमवार 17 जून से मंगलवार 25 जून 2019 तक
स्थान : आर्य समाज, जानीपुर, जम्मू
श्री सुभाष बब्बर-09419301915, रमेश खजुरिया-9797384053

12. उड़ीसा युवक निर्माण शिविर
शुक्रवार 10 मई से वीरवार 16 मई 2019 तक
स्थान: वेद व्यास संस्कृत महाविद्यालय, राऊरकेला, उड़ीसा
सम्पर्क : आचार्य धनेश्वर बेहरा-9438441227

13. जयपुर में आर्य कन्या शिविर
शुक्रवार, 10 मई से वीरवार 16 मई 2019 तक
श्री विनायक एजुकेशन कैम्पस, नायला, कानोता, जयपुर
सम्पर्क : श्री प्रमोद पाल-9828014018

14. उत्तराखण्ड युवक निर्माण शिविर
शनिवार, 18 मई से शनिवार 25 मई 2019 तक
स्थान: सैनिक हाई स्कूल, बागेश्वर, उत्तराखण्ड
संरक्षक: गोविन्दसिहं भण्डारी व सुश्री लक्ष्मी टाकुली संयोजक-09412930200

15. यमुना नगर युवा प्रेरणा सम्मेलन
शुक्रवार 28 जून से रविवार 30 जून 2019 तक
स्थान: सत्यार्थ भवन, रादौर, जिला यमुना नगर, हरियाणा
संयोजक: सौरभ आर्य -9813739000

16. फरीदाबाद युवक चरित्र निर्माण शिविर
रविवार 2 जून से रविवार 9 जून 2019 तक
स्थान: सैनी सीनियर सै. स्कूल, भारत कालोनी, फरीदाबाद
संयोजक: जितेन्द्र सिंह आर्य -9210038065, वीरेन्द्र योगाचार्य-9350615369

17. मध्य दिल्ली युवा निर्माण शिविर
मंगलवार 14 मई से बुधवार 22 मई 2019 तक
स्थान: हीरालाल जैन सी.सै.स्कूल, सदर बजार, दिल्ली-6
संयोजक: गोपाल जैन -9810756571, आदर्श आहुजा-9811440502

18. 16वां स्वामी दीक्षानन्द स्मृति दिवस
रविवार 19 मई 2019 प्रात: 9:30 से 1:30 तक
स्थान: वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, नालापानी, देहरादून
संयोजक: दर्शन अग्निहोत्री-9810033799, प्रेमप्रकाश शर्मा-9412051586

अनिल आर्य	महेन्द्र भाई	रामकुमार सिंह	यशोवीर आर्य	गवेन्द्र शास्त्री	धर्मपाल आर्य
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	राष्ट्रीय बौद्धिकाध्यक्ष	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
9868051444	7703922101	9868064422	9312223472	9810884124	9871581398

केन्द्रीय कार्यालय: आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली-110007, फोन-7550568450, 9958889970
Email: aryayouth@gmail.com Website: www.aryayuvakparishad.com Join-http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

पृष्ठ 1 का शेष

आर्य कन्या पाठशाला इण्टर कॉलेज खुर्जा (उ. प्र.) में कन्या चरित्र निर्माण एवं योग प्रशिक्षण शिविर भव्यता के साथ सम्पन्न

में आक्रमण किया और कहा कि बेटियों को पेट में ही मार देना या मरवा देना सबसे बड़ा पाप है। अतः हम सबको यह संकल्प लेना चाहिए कि मातृशक्ति के गौरव और सम्मान को पुनः प्रतिष्ठा दिलाने के लिए हम सभी को नर–नारी समता के सिद्धान्त को व्यवहार में लाना चाहिए।

इस अवसर पर बहन पूनम आर्या ने अपने सम्बोधन में माता को बच्चे का पहला गुरु बताया और उन्होंने कहा कि शतपथ ब्राह्मण के अनुसार **मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद**। अर्थात् माता बच्चे का पहला गुरु है, पिता दूसरा गुरु है एवं आचार्य तथा शिक्षक तीसरा गुरु होता है। अतः माता का शिक्षित होना धार्मिक होना तथा विदुषी होना अत्यन्त आवश्यक है। उन्होंने कहा कि बेटा और बेटी में किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं करना चाहिए, क्योंकि बेटी दो घरों का निर्माण करती है।

इस अवसर पर बहन प्रवेश आर्या ने अपने वक्तव्य में बेटी बचाओ अभियान की उपलब्धियाँ बताते हुए कहा कि कन्या भ्रूण हत्या तथा महिला उत्पीड़न के विरुद्ध सर्वप्रथम आर्य समाज ने भारत में आन्दोलन शुरू किया था। आज उसी आन्दोलन को केन्द्र सरकार भी पूरा महत्त्व देकर चला रही है। यह आर्य समाज की बड़ी उपलब्धि है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. धीरज सिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश ने घोषणा की कि ऐसे शिविर प्रतिवर्ष हम लगाते रहेंगे ताकि हमारी बेटियाँ जो भारत का भविष्य हैं वे संस्कारित हो सकें। डॉ. धीरज सिंह जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा नारी जाति को दिये गये सम्मान को ऐतिहासिक कार्य बताया। इस अवसर पर उन्होंने स्वामी आर्यवेश जी तथा अन्य अतिथियों का शॉल तथा स्मृति चिन्ह देकर सम्मान भी किया।

समापन समारोह में विशेष रूप से आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के उपप्रधान श्री वीरेन्द्र रत्नम, जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा मेरठ के प्रधान श्री विद्यासागर जी, मंत्री श्री जिले सिंह आर्य, आर्य कन्या इण्टर कॉलेज बुलन्दशहर की प्रधानाचार्या श्रीमती अनीता भारद्वाज आदि भी उपस्थित थे। अतिथियों के सम्मान में आर्य समाज के प्रधान श्री घनश्याम सिंह आर्य, मंत्री श्री रामस्वरूप आर्य तथा कोषाध्यक्ष श्री संजय वर्मा आदि ने भी विशेष सहयोग दिया।

इस अवसर पर श्री रामावतार आर्य तथा उनके सुपुत्र श्री संजय वर्मा ने विद्यालय की सभी अध्यापिकाओं तथा आगन्तुक सभी अतिथियों को चांदी जड़ित नोट भेंटकर सम्मानित किया। अन्त में विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती शशि बाला ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए बहन प्रवेश तथा बहन पूनम आर्या का विशेष आभार व्यक्त किया और उनसे आग्रह किया कि वे प्रतिवर्ष हमारे विद्यालय में पधारकर हमारी छात्राओं को संस्कारित कर कृतार्थ करें। शांति पाठ के साथ कार्यक्रम अत्यन्त उत्साह के वातावरण में समाप्त हुआ।

प्रख्यात योगाचार्य, साहित्यसेवी, आर्य संस्कृति के प्रबल समर्थक

स्वामी दिव्यानन्द जी का देहावसान

कनखल हरिद्वार में गंगा के तट पर सैकड़ों गणमान्य महानुभावों की उपस्थिति में किया गया अन्तिम संस्कार

अन्तिम विदाई में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी रहे उपस्थित

प्रख्यात योगाचार्य, साहित्यसेवी, आर्य संस्कृति के प्रबल समर्थक, देश–विदेश में यज्ञ, योग, वेद की अजस्र धारा प्रवाहमान करने वाले कर्मयोगी स्वामी दिव्यानन्द जी का 28 मई, 2019 को लम्बी बीमारी के बाद निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 29 मई, 2019 को कनखल में गंगा के तट पर सैकड़ों गणमान्य महानुभावों की उपस्थिति में पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, अनेकों गुरुकुलों के संस्थापक एवं श्रीमद्दयानन्द आर्ष गुरुकुल परिषद् के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, पूर्व गन्ना मंत्री स्वामी ओमवेश जी, हरिद्वार ग्रामीण के विधायक स्वामी यतीश्वरानन्द जी, स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी महाराज, स्वामी सच्चिदानन्द जी यमुनानगर, स्वामी केवलानन्द जी, स्वामी भजनानन्द शुक्रताल, स्वामी सोम्यानन्द जी, स्वामी परमानन्द जी, स्वामी ओमकारानन्द जी, स्वामी ओम शरणानन्द जी, पतंजलि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. महावीर अग्रवाल, गुरुकुल कांगड़ी वेद विभाग के अध्यक्ष डॉ. रूपकिशोर शास्त्री, डॉ. सोमदेव शतांशु, गुरुकुल कांगड़ी के मुख्याधिष्ठाता डॉ. दीनानाथ शर्मा, गुरुकुल कांगड़ी के प्राध्यापक डॉ. योगेश जी, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पूर्व प्रस्तोता डॉ. जयदेव वेदालंकार, योगधाम के ट्रस्टी डॉ. वेदव्रत आलोक, आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर के पूर्व प्रधान श्री रामकृष्ण शास्त्री, माता सुकीर्ति वानप्रस्था, श्री ओम प्रकाश अग्रवाल सिरसागंज, मानव सेवा प्रतिष्ठान, दिल्ली के कार्यकारी प्रधान श्री रामपाल शास्त्री, गुरुकुल कांगड़ी के सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य श्री रणवीर सिंह शास्त्री, वैदिक विद्वान श्री विरजानन्द दैवकरणी, तपोवन आश्रम देहरादून के मंत्री श्री प्रेम प्रकाश शर्मा, भारत स्वाभिमान ट्रस्ट के केन्द्रीय प्रभारी डॉ. जयदेव आर्य, आर्य समाज हरिद्वार के प्रबन्धक डॉ. वीरेन्द्र पंवार, आर्य समाज बी.एच.ई.एल. के प्रधान श्री प्रवीण अग्रवाल, आर्य समाज तीरथपुर बिजनौर के प्रधान श्री विजय कुमार आर्य, श्री बलजीत सिंह आदित्य दिल्ली, श्री शिव कुमार मदान उपप्रधान दिल्ली सभा, श्री अंकित आर्य एडवोकेट अमरोहा, आचार्य राजेन्द्र गुरुकुल कालवा, आचार्य ऋषिपाल गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, आचार्य आत्म

प्रकाश गुरुकुल कुम्भाखेड़ा, श्री ज्ञानेश्वर जी गुरुकुल करतारपुर, पंजाब, महात्मा कौशल मुनि जी प्रबन्धक महर्षि दयानन्द योगधाम फरीदाबाद सहित अनेकों संन्यासी, विद्वान तथा गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

स्वामी दिव्यानन्द जी ने अपने व्यक्तित्व और कर्तृत्व से आर्य जगत में जिस गौरव और उज्ज्वल यश को प्राप्त किया था वह किसी भी नवागंतुक आर्य कार्यकर्ता के लिए प्रेरणा और आदर्श का विषय है। लगभग पांच दशकों तक आर्य जगत में योग, यज्ञ, वेद का अनुशीलन कर इनके प्रचार–प्रसार को बुलन्दी तक पहुंचाने का जो निष्काम प्रयास उन्होंने किया उसे देखते हुए उनके समक्ष मस्तक स्वतः ही श्रद्धा से झुक जाता है। मौन सद्भावना से आर्य समाज को श्री सम्पन्न बनाने में उनका अवदान महत्त्वपूर्ण है।

अन्त्येष्टि के उपरान्त उपस्थित श्रद्धालु आर्यजनों को सम्बोधित करते हुए सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने स्वामी दिव्यानन्द जी के देहावसान को आर्य जगत की अपूर्णीय क्षति बताया। स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने अपने उद्बोधन में स्वामी दिव्यानन्द जी को अपना प्रेरणास्रोत बताया। स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि मेरी योग की यात्रा स्वामी दिव्यानन्द जी की प्रेरणा से ही शुरू हुई। स्वामी ओमवेश जी ने भावपूर्ण शब्दों में श्रद्धांजलि व्यक्त करते हुए कहा कि स्वामी दिव्यानन्द जी ने और मैंने एक साथ संन्यास की दीक्षा ली थी और वर्षों मिलकर हमने साथ कार्य किया था। अतः उनके देहावसान से मुझे व्यक्तिगत रूप से अत्यन्त दुःख पहुंचा है। डॉ. महावीर अग्रवाल जी ने स्वामी दिव्यानन्द जी को आर्य जगत की महान विभूति बताते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

अन्त्येष्टि स्थल पर विभिन्न संस्थाओं एवं समाजों के प्रतिनिधि तथा अधिकारी भारी संख्या में उपस्थित थे। सभी ने अश्रुपूरित नेत्रों से स्वामी जी को अन्तिम विदाई दी। स्वामी दिव्यानन्द जी के पार्थिव शरीर को उनके उत्तराधिकारी युवा संन्यासी स्वामी मेधानन्द जी ने मुखाग्नि देकर उन्हें पंचतत्त्व में विलीन किया।

स्वामी दिव्यानन्द जी की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन 31 मई, 2019 को पतंजलि योगधाम ज्वालापुर में किया गया है।

आर्य समाज सिरसा (हरियाणा) के संरक्षक श्री जगदीश सींवर के भतीजे

श्री राजेश कुमार का असामयिक निधन

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी शोक संतप्त परिवार को सांत्वना देने के लिए सिरसा पहुंचे

आर्य समाज सिरसा (हरियाणा) के संरक्षक, कर्मठ एवं जुझारू कार्यकर्ता चौ. जगदीश सींवर के भतीजे श्री राजेश कुमार सुपुत्र श्री महावीर सिंह का असामयिक देहावसान गत 19 मई, 2019 को उनके पैतृक गाँव शेखपुरिया, जिला–सिरसा में हृदयगति रुकने से हो गया। उनकी आयु 50 वर्ष थी।

शोक संतप्त परिवार के प्रति अपनी सांत्वना व्यक्त करने एवं श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी गत 24 मई, 2019 को उनके गांव शेखपुरिया पहुंचे और परिवारजनों का दुःख की इस घड़ी में ढांढस बंधाया। श्री राजेश कुमार का देहावसान हृदयगति अवरूद्ध हो जाने से हो गया था। इससे समस्त परिवार को बेहद गहरा आघात लगा है। स्वामी आर्यवेश जी ने उपस्थित परिवारजनों एवं शुभचिन्तकों के समक्ष जीवन एवं मृत्यु के सम्बन्ध में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए बताया कि जीवात्मा का शरीर में आना जन्म तथा जीवात्मा का शरीर से निकल जाना मृत्यु कहलाता है। मृत्यु जीवात्मा की नहीं होती अपितु नश्वर शरीर की होती है। अतः हमें ईश्वर के अटल सिद्धान्त के समक्ष नतमस्तक होने के सिवाय और कोई विकल्प दिखाई नहीं देता। ऐसी स्थिति में परिवार को दिवंगत आत्मा के असामयिक देहावसान से होने वाले दुःख से मुक्त होने के लिए ईश्वर से ही यह प्रार्थना करनी चाहिए कि वे इस दुःख को सहन करने की उनको शक्ति दें।

इस अवसर पर सर्वश्री जगदीश सींवर के अतिरिक्त रमेश कुमार सींवर, बीट्टू सींवर, नत्थूराम सींवर, विनोद सींवर, भागचन्द्र सींवर, गजानन्द सींवर, सुखपाल सींवर, राजू, सन्तलाल, धर्मेन्द्र परवत, ऋषिपाल आदि के अतिरिक्त सर्वश्री इन्द्रपाल आर्य, लाधूराम धुनिया, नरेश भोला, पृथ्वी सिंह, श्रवण कुमार, साहबराम हिडारिया, श्रवण सिंह नामधारी, अशोक वर्मा प्रधान आर्य समाज सिरसा, नामदेव शास्त्री मंत्री, राजेन्द्र आर्य लेखा निरीक्षक, कुलदीप आर्य उपप्रधान, ओम प्रकाश पुस्तकाध्यक्ष आदि अनेक गणमान्य लोगों ने दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि तथा शोक संतप्त परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त की। तदुपरान्त स्वामी आर्यवेश जी, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के जिला प्रधान श्री इन्द्रपाल आर्य के निवास पर गये जहाँ इन्द्रपाल जी के पूज्य पिता श्री ओम प्रकाश आर्य तथा अन्य परिजनों ने उनका आतिथ्य किया। स्वामी जी के साथ आये आर्य समाज के अन्य पदाधिकारियों तथा विशिष्ट महानुभावों ने दोपहर का भोजन उनके निवास पर ही किया। स्वामी जी के धन्यवाद ज्ञापन के बाद वे वापिस लौट आये।

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत
यजुर्वेद भाष्य
भारी छूट पर उपलब्ध
250 रुपये मूल्य का यजुर्वेद भाष्य
मात्र 150 रुपये में दिया जा रहा है
(डाक व्यय अतिरिक्त)
(जल्दी करें ग्रन्थ सीमित मात्रा में ही उपलब्ध है)
प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2

सुधार के दो साधन ब्रह्म शक्ति व क्षात्र-शक्ति

– पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय

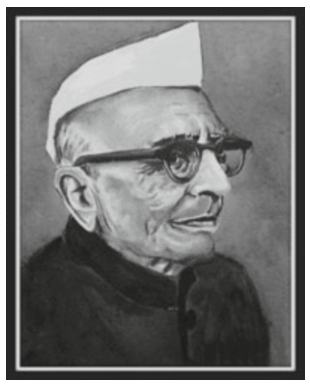

हर सुधार के दो मुख्य कारण हैं। एक ब्रह्म-शक्ति और दूसरी क्षात्र-शक्ति। अर्थात् जब ब्राह्मण विद्वान् बुरे आचार व्यवहार के दोषों का विस्तार से तथा स्पष्ट रूप से खण्डन करते हैं और उनके उपदेशों का लोगों पर प्रभाव पड़ता है तथा वे सामाजिक अनाचार को छोड़ने के लिए स्वयं उद्यत हो जाते हैं तो एक प्रकार का सामाजिक वातावरण उत्पन्न हो जाता है जिसमें लोगों को अनाचार करने का साहस ही नहीं होता। फिर भी कुछ ऐसे मनचले होते हैं जिनमें नियमोल्लंघन की प्रवृत्तियाँ होती हैं वे समाज मत की परवाह नहीं करते। उनकी लाठी किसी के माल को छीनने के लिए तैयार रहती है। वे कहा करते हैं कि हम किसी से नहीं डरते। देखें हमारा कोई क्या करेगा?ऐसे लोग बहुत दूषित प्रथाओं को जीवित रखने में सहायता देते हैं। इनके लिए क्षात्र शक्ति अर्थात् सुदृढ़ शासक (राजा) की आवश्यकता होती है कि वह दूसरे लोगों को ऐसे आततायियों के प्रभाव से बचा सकें। इस प्रकार ब्राह्मण और राजा दोनों मिलकर सुधार का काम करते हैं।

भारत के भीषण महायुद्ध के पश्चात् इन दोनों शक्तियों का लगभग नाश हो गया। जो ब्राह्मण शेष रहे वे राजाओं के मुंह ताकते रहते थे। राजे तो 'अन्नदाता' कहलाते थे। जो 'अन्न' के दाता थे वे 'मन' के भी दाता थे। जैसा खाये अन्न, वैसा बने 'मन'। दरिद्र के विचार भी दरिद्र हो जाते हैं। ब्राह्मण विद्वान् शास्त्रों की भी ऐसी व्याख्या कर देते थे कि राजे लोग खुश हो जायें। जब राजों में बहु-पत्नी विवाह की प्रथा पड़ी अर्थात् जब राजे अपनी इन्द्रियों को वश में न रख सकें तो ब्राह्मणों ने शास्त्रों के उपदेशों की भी वैसी ही व्याख्या कर दी, जिसमें राजा साहब को अपनी इच्छापूर्ति का अवसर मिल सके।

यहां हम एक वर्तमान युग के रजा साहब का उल्लेख करते हैं। राजा साहब को शराब पीने की बुरी लत थी। वे शराब के बिना दो घण्टे भी नहीं रह सकते थे। उनके मन में आया कि एकादशी का उपवास रखना चाहिए। परन्तु एकादशी का व्रत और मद्यपान यह तो दो परस्पर विरोधी काम थे। उनका समन्वय कैसे होगा?एक दिन राजा साहब ने पक्का इरादा कर लिया कि व्रत रखेंगे और शराब न पियेंगे। किसी प्रकार दोपहर तक तो काट लिया, जब तीसरा पहर आया तो शराब न पीना उनकी शक्ति से बाहर की बात हो गई, और वे घबराने लगे। अब किया भी क्या जाये?शराब पीते है। तो व्रत का फल नष्ट हो जाता है। नहीं पीते तो जान की जोखों है। अन्त में पुरोहित जी ने आते ही समस्या को सरल कर दिया। **''महाराज! थोड़ी सी शराब पी लें परन्तु उसमें कुछ बूंदें गंगाजल की डाल लें।''**

पण्डितों को ऐसे चुटकुले बहुत आते थे। यदि किसी राजा का मन किसी सुन्दरी पर लट्टू हो गया तो पण्डित जी कहते – ''महाराज! यज्ञ के एक यूप में कई गायें बंध सकती हैं परन्तु एक गाय को कई यूपों में नहीं बांध सकते। इसलिए एक पुरुष कई पत्नियों से विवाह कर सकता है परन्तु एक स्त्री कई पति नहीं कर सकती।

महाराजा दशरथ भी इसी प्रकार की किसी युक्ति का शिकार हुए होंगे अन्यथा वे कैकेयी से विवाह करके अपनी मृत्यु का स्वयं साधन न बनते।

हम दूसरे मतों तथा देशों में भी ऐसा ही पाते हैं।

इंग्लैंड का राजा था अष्टम हेनरी। उसका बड़ा भाई मर गया था। उसकी स्त्री थी हस्पानियां देश के आरगन प्रदेश के राजा की कन्या कैथरायन। ईसाई धर्म के विधान के अनुसार बड़े भाई की विधवा से विवाह करना निषिद्ध है। परन्तु जब हेनरी सप्तम ने यह इच्छा की कि उसके राजकुमार हेनरी का विवाह उसके बड़े भाई की विधवा से हो जाये तो रोम के पोप से आज्ञा मांगी गई। पोप ने आज्ञा दे दी और कैथरायन अपने देवर हेनरी की वैधानिक पत्नी बन गई, उसका पति (अष्टम हेनरी) के नाम से इंग्लैंड की गद्दी पर बैठा। कैथरायन से एक पुत्री भी उत्पन्न हुई जिसका नाम था मेरी या मेरी ट्यूर। परन्तु मनचले बादशाह का मन एक दिन महाराणी की एक अनुचरी पर आसक्त हो गया। बहुविवाह विधान के विरुद्ध था। किया जाये तो क्या?पादरियों की शरण ली गई। खुशामदी पण्डितों, खुशामदी मौलवियों और खुशामदी पादरियों की न तो हिन्दुओं में कमी है, न मुसलमानों में, न ईसाइयों में। पादरियों ने अकल दौड़ाई और यह निर्णय किया कि बादशाह की पहली शादी काननू के विरुद्ध थी। इसलिए पोप महादेय के हस्तक्षेप के होते हुए भी कैथरायन को तलाक दे दी गई और दूसरी महाराणी जी आ विराजमान हुई।

इसीलिए मैंने ऊपर कहा है कि सुधार के लिए सुदृढ़ ब्राह्मणों और सुदृढ़ क्षत्रियों को आवश्यकता है।

मैंने 1945 में शहपुराधीश जी के पुस्तकालय में एक पुस्तिका देखी, जिसमें हिन्दू शास्त्रों से बहुत से श्लोक और सूत्र मांस-भक्षण के पक्ष में उद्धृत किये गये थे। पुस्तक बहुत छोटी थी और लेखक की योग्यता की भी परिचायक न थी परन्तु उस पर पांच सौ (500) का पारितोषिक लेखक को दिया गया था। यह पुस्तक शायद आर्य समाज के उस युग में लिखी गई थी जब आर्य समाज की दो पार्टियाँ हो गई थीं।

स्वामी दयानन्द का सुधार कार्य केवल भारतवर्ष तक सीमित नहीं है। आर्य समाज एक सार्वभौमिक संस्था है। संसार का उपकार करना अर्थात् आध्यात्मिक, शारीरिक, आचार तथा अर्थ सम्बन्धी उन्नति करना उसका ध्येय है।

महाभारत के बहुत दिनों बाद तक यद्यपि ब्राह्मण शक्ति और क्षत्रिय शक्ति बहुत निर्बल हो गई थीं और न कोई उपदेष्टा ब्राह्मण रहा न कोई दण्ड देने वाला क्षत्रिय तथापि राजा और प्रजा का धर्म तो एक ही था और उनके शास्त्र भी एक थे।

परन्तु जब ईसाई और मुसलमान आये तो सुधार का काम और कठिन हो गया। शासकों ने हिन्दू धर्म की कुप्रथाओं को धर्म परिवर्तन का एक साधन बना लिया और उन कुप्रथाओं को दूर करने की इसलिए कोशिश की कि लोग उन बुराइयों के दोषों को समझकर धर्म परिवर्तन कर लें (अर्थात् ईसाई या मुसलमान हो जायें।) प्रजा ने इसका विरोध किया कि किसी विधर्मी को हमारे धर्म में हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं है।

राजा राममाहेन राय ने 'सती' की दूषित प्रथा को जो घोर निर्दयता पूर्ण थी, ईसाई मिशनरियों की सहायता से रुकवाया था, अतः ब्राह्मणों ने बहुत विरोध किया। उनका कहना था कि ईसाई शासकों को हिन्दू धर्म में हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है। इसके बहुत दिनों पश्चात् श्री रमेशचन्द्र दत्त (आर. सी. दत्त) ने ऋग्वेद के अध्ययन से यह सिद्ध किया कि जिस वेद मन्त्र के आधार पर ''सती प्रथा'' (मृत पति के साथ जीवित पत्नी का दाह करना) वेद विहित बताई जाती है उसके पढ़ने में गलती हुई है। 'अग्रे' शब्द (एकार) के स्थान में 'अग्ने' (अकार) पढ़ लिया गया है, अस्तु। यह एक अलग विषय है।

हमारे कहने का तात्पर्य यह है कि जब राजा और प्रजा के धर्म भिन्न-भिन्न होते हैं और धार्मिक संस्थाएं भी अलग-अलग होती हैं तो सुधार बहुत कठिन हो जाता है।

स्वामी दयानन्द के समय में यही कठिनाई थी। शासक ईसाई और प्रजा हिन्दू। जब बाल विवाह के विरुद्ध आवाज उठी तो पण्डित लोग चिल्लाये कि गवर्नमेंट को हमारे धर्म में हस्तक्षेप करने या हिन्दू ला (कानून) के बदलने का कोई अधिकार नहीं।

प्रायः छोटी लड़कियों का विवाह युवा (बड़ी आयु वालों) लोगों के साथ हो जाता था। दस या नौ साल की लड़की गृहस्थ धर्म पालन का भार नहीं उठा सकती थी। तब हिन्दू ललनाओं का जीवन संकट में था। उसके विरुद्ध सरकार की ओर से कानून बनाया गया, तब महात्मा तिलक जैसे सर्वोत्तम (संभ्रान्त) लोगों ने भी इसका विरोध किया। युक्ति वही थी कि ईसाई सरकार को हमारे धर्म में परिवर्तन करने का अधिकार नहीं।

स्वामी दयानन्द ने इस समस्या का एक नया समाधान निकाला, कि यदि कोई प्रथा वैदिक शास्त्रों के विरुद्ध है तो या तो पण्डित लोग इसका सुधार अपने हाथ में लें, अन्यथा हम इस दूषित प्रथा को बन्द करने में सरकार की सहायता लेने में संकोच न करेंगे।

सन् 1856 ई. में ईसाई शासन की सहायता से श्री पण्डित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर की कोशिश से विधवा पुनर्विवाह का कानून पास हो गया परन्तु यह कानून अलमारियों में पड़ा सड़ता रहा। जब इस प्रश्न को आर्य समाज ने अपने हाथ में लिया तो देश की काया पलट दी।

आर्यसमाजियों का कहना है कि हम यह स्वीकार करते हैं कि सुधार का मुख्य कर्त्तव्य तो ब्राह्मणों का है, सर्वसाधारण की मनोवृत्ति को यही बदल सकते हैं परन्तु यदि ब्राह्मण मन्द हो जायें या लकीर के फकीर हो जायें या स्वयं सुधार का उत्तरदायित्व अपने सिर पर न लें तो कुमार्ग पर चलती हुई पथभ्रष्ट जनता को उसके भाग्य पर नहीं छोड़ देना चाहिए। सरकार की सहायता भी लेनी चाहिए।

उद्देश्य है सुधार! सुधार में दोनों शक्तियों अर्थात् ब्रह्म-शक्ति और क्षात्रशक्ति की आवश्यकता है। आर्य समाज ने कई बार सुधार के विषय में सरकार से मदद ली है।

बाल-विवाह के विरुद्ध कानून पास कराने का श्रेय है श्री हरविलास शारदा को जो आर्य समाज के एक प्रतिष्ठित नेता थे, और जिनके नाम पर इस कानून को शारदा एक्ट कहते हैं।

जन्म -मूलक जाति-पांति तोड़कर विवाह करने के सम्बन्ध में जो एक्ट (कानून) पास हुआ और जिसको आर्य समाज विवाह एक्ट कहते हैं उसको पास कराने वाले श्री घनश्याम सिंह जी गुप्त थे जो 40 वर्ष से अधिक समय से अब तक आर्य समाज का नेतृत्व कर रहे हैं।

स्वामी दयानन्द का सुधार कार्य केवल भारतवर्ष तक सीमित नहीं है। आर्य समाज एक सार्वभौमिक संस्था है। संसार का उपकार करना अर्थात् आध्यात्मिक, शारीरिक, आचार तथा अर्थ सम्बन्धी उन्नति करना उसका ध्येय है।

महाभारत के पश्चात् इन पांच हजार सालों में जो बुराइयां भारतवर्ष या दूसरे देशों में फैल गईं और जिनके कारण समस्त मानव जाति असत्य मार्ग पर चल पड़ी उन बुराइयों को दूर करने का प्रोग्राम स्वामी दयानन्द ने संसार के समक्ष रखा है। यदि आर्य समाज के लोग श्रद्धा, सुदृढ़ गति और ऋजुता के साथ आगे बढ़ेंगे तो पक्की आशा है कि हम वैदिक धर्म के उस युग को ला सकें जो महाभारत से बहुत पूर्व विद्यमान था।

यही आस अटक्यो रहे, अलि गुलाब के मूल।
अयि है बहुरि वसन्त ऋतु, इन डारन बहु फूल॥

शरीर मन के नियंत्रण पर चलता है

मन और शरीर ऊपर से देखने में दो अलग-अलग वस्तुएँ प्रतीत होती हैं, पर वस्तुत: इनमें किसी प्रकार का भेद नहीं है। केवल रूप में भिन्नता है। विशुद्ध रूप से इन दोनों का अस्तित्व एक-दूसरे पर टिका हुआ है। मन शरीर के बिना कुछ कर नहीं सकता और शरीर मन के बिना किसी भी कार्य को कर सकने में असमर्थ होता है। इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि शरीर और मन का एक-दूसरे से कितना घनिष्ठ सम्बन्ध है।

शरीर मन की रक्षा करने वाला ऊपरी आवरण है। इस जड़ शरीर का निर्माण जड़ और चेतन तत्त्वों के मिश्रण से हुआ है, उन्हीं तत्त्वों के सूक्ष्म और अदृश्य स्वरूप से हमारे सूक्ष्म शरीर की रचना हुई है। अत: शरीर और मन में मात्र इतनी ही भिन्नता है कि एक दृश्य है और दूसरा अदृश्य, एक स्थूल है दूसरा सूक्ष्म। उदाहरणार्थ - पानी का साधारण रूप जड़ है और उसका दूसरा रूप सूक्ष्म है जो दिखाई नहीं पड़ता है, जिसे हम भाप कहते हैं। जिस प्रकार पानी और भाप के स्वरूप में भिन्नता भर है, गुण दोनों के समान हैं, उसी प्रकार सूक्ष्म और स्थूल शरीर के बारे में भी है। स्वरूप में भिन्नता है, गुण दोनों के ही समान हैं। मन में विचार उत्पन्न होते हैं। शरीर उन्हें क्रियारूप में परिणत कर देता है। मनुष्य के मन में उदित होने वाले विचार शरीर को प्रभावित करते हैं। उससे प्रभावित होकर ही व्यक्ति का शरीर क्रियाशील बनता है। प्राय: लोगों को ऐसा कहते सुना जाता है कि 'मेरा मन ठीक नहीं है' इस समय हम काम नहीं कर सकते हैं। कारण कि मन दुखी, चिंतित एवं असंतुष्ट होता है तो उसका प्रभाव हमारे शरीर पर भी पड़ता है।

मनुष्य वर्तमान समय में जो कुछ भी है अपने मन में निहित विचारों के ही कारण है। मन में व्यक्ति जिस बात का विचार कर लेता है, वैसा ही आचार-व्यवहार करता है फलत: उसका जीवन उसी ढांचे में ढल जाता है, जब कभी हमारे ऊपर कोई विपत्ति आ पड़ती है तो हम उसका पूरी तरह से सामना करते हैं तथा सफल हो जाते हैं। ऐसे ही क्षणों में मन की उस दिव्य एवं अमोघ शक्ति का हमें आभास होता है। यह विराट शक्ति सबके अन्दर सुप्तावस्था में विद्यमान रहती है। इसकी तुलना हम पत्थर में छिपी हुई अग्नि से कर सकते हैं। उसे हम कुछ प्रयत्न एवं पुरुषार्थ करके जला सकते हैं। मन की इसी प्रचंड शक्ति के सहारे मनुष्य बड़ी-बड़ी कठिनाइयों को पार कर जाता है और कभी-कभी तो इतने बड़े-बड़े काम कर दिखाता है कि जिसकी कभी आशा भी नहीं की जा सकती थी।

कार्य के प्रति सच्चा प्रेम मन में उत्पन्न हो जाए तो व्यक्ति निठल्ले बैठे रहना पसंद न करेगा। आलसी और दरिद्री लोग बेकार पड़े रहने में सुख अनुभव करते हैं, किन्तु काम-काजी वास्तविक कार्य करने में ही सुख पाते हैं। कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्तियों के जीवन में ऐसे अनेक अवसर उत्पन्न होते हैं कि यदि आलसियों के जीवन में ये अवसर आ जाएँ तो वे बीमार ही पड़ जाएँ, किन्तु कर्मठ व्यक्तियों के मन और शरीर पर उनकी कर्त्तव्यपरायणता के कारण इन साधारण कष्टों का कुछ असर नहीं पड़ता है।

घर में आग लग जाने के कारण अपना बचाव करने के लिए कई महीनों से बीमार पड़ा हुआ व्यक्ति उठकर भाग निकलता है। रोगी में यह विलक्षण परिवर्तन उसके अंदर छिपी हुई शक्ति के कारण होता है। उसी अद्‌भुत शक्ति से प्रेरित होकर व्यक्ति दुरुह कार्यों को भी कर दिखाता है। जब तक कोई कठिन परिस्थिति नहीं होती है, तब तक उसे अपनी सहनशीलता एवं सामर्थ्य का सही अनुमान नहीं लग पाता।

कई भयंकर रोगियों की स्थिति देखकर देखने वाला यह सोचने लगता है कि न जाने इसके प्राण कहाँ रुके हुए हैं। इस कठोर यातना को वह कैसे सह रहा होगा, किन्तु जब ऐसी स्थिति उसकी हो जाती है तो वह जैसे-तैसे उसे सहन कर लेता है। अभिप्राय यह है कि मनुष्य सशक्त मन के द्वारा शरीर से हर कठिनाई का सामना कर लेता है। मन में जिस तरह के विचार उठते हैं, शरीर पर उनका ही प्रभाव पड़ता है। मन रोगी है तो शरीर भी रोगी हो जाता है। भावी संकट की कल्पना मात्र करके मनुष्य इतना भयभीत हो जाता है कि उसकी सारी शक्तियाँ शिथिल पड़ जाती हैं, यह सब उसकी मन की दुर्बलता का द्योतक है। मन की दुर्बलता ही व्यक्ति के शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुख का नाश करती है। विपत्ति जितनी ज्यादा भयानक नहीं होती, उससे अधिक मन की अस्त-व्यस्तता हमें दुखी एवं असंतुष्ट बना देती है। मनुष्य जो कुछ भी अच्छा-बुरा कार्य करता है वह सब सूक्ष्म शरीर की अकथनीय एवं अज्ञात शक्ति से प्रेरित होकर ही करता है।

मन में उत्पन्न हुई शक्ति से शरीर कार्य करता है। शरीर में कभी कोई कष्ट होता भी है, किन्तु मन उत्साह एवं प्रसन्नता से पूरित होता है, तब शारीरिक कष्ट भी थोड़ी देर के लिए विस्मृत हो जाते हैं। हम उस अमोघ शक्ति का नाश करते जा रहे हैं जो दु:खों, रोगों एवं विपत्तियों में भी धैर्यपूर्वक सामना करने की हमें प्रेरणा देती है। यह शक्ति जब मन से प्रस्फुटित होती है, तभी शरीर उसके सहारे कार्य कर दिखाता है। व्यक्ति अनेक समस्याओं से उलझा हुआ मन में चिंतित रहता है और इसका असर उसके शरीर पर पड़ता है। मन खिन्न है तो शरीर पर उसका असर अवश्य पड़ेगा। आवश्यकता इस बात की है कि शरीर और मन के अविच्छिन्न सम्बन्ध के विषय में ध्यान रखते हुए मन को शुद्ध एवं संतुलित रखें। तभी हम स्वस्थ्य रह सकेंगे और मन की दिव्यशक्ति के सहारे प्रगतिशील बन सकेंगे।

मनुष्य ईश्वर की सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। उसकी रचना में उसने अपना सारा कौशल लगा डाला है, इतना ही नहीं, सुखी एवं समृद्धि बनाने वाली शक्ति भी प्रदान की है। जिसके सहारे मनुष्य दु:ख-कष्ट की ज्वाला को मनरूपी प्रचंड शक्ति के माध्यम से शांत करता चलता है। जीवन को दिव्य से दिव्यतम बना देने की शक्ति इसी के अन्दर छिपी रहती है।

मनुष्य के शरीर के अंदर सभी सुख-सुविधा एवं प्रगति के साधन छिपे हुए हैं। मनुष्य को सुख बाहरी किसी वस्तु में नहीं मिल सकता है, वह तो तभी मिल सकता है, जब वह अपनी आंतरिक शक्ति से परिचित हो। उन साधनों के उपयोग से वह स्वास्थ्य सुख एवं शांति प्राप्त कर सकता है। यह मार्ग प्रत्येक व्यक्ति के लिए खुला हुआ है। मनुष्य के अंदर एक दैवी शक्ति निवास करती है। यदि यह शक्ति विकसित हो जाए तो शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार के दु:ख खत्म हो जाते हैं।

गीता में कहा गया है - ''मन ही मनुष्य के बंधन और मोक्ष का कारण है।'' व्यक्ति का मन अगर भवबंधनों अर्थात् काम-क्रोध, मद-लोभ, दंभ-दुर्भाव, दोष आदि पर विजय प्राप्त कर लेता है तो वही मोक्ष की स्थिति होती है, तभी बंधनों से व्यक्ति छुटकारा पा जाता है। हमारा मन ही बंधन का कारण है, क्योंकि हमारे मन में दूषित विचारों का बाहुल्य हो तो शरीर भी अवांछनीय कार्यों को करेगा और फलस्वरूप दु:ख भोगने पड़ेंगे, शरीर मन की प्रेरणा से कार्य करता है। मन में विचार उत्पन्न न हों तो शरीर तो जड़ वस्तु है, वह कैसे कोई कार्य कर सकता है।

शरीर और मन के अटूट संबन्ध पर विचार करते हुए हमें अपने अंदर छिपी हुई मन:शक्ति को जानना चाहिए। जो कि हमारे शरीर को नियंत्रण में रखती है और दिव्य एवं आलौकिक बनाने में सहायक सिद्ध होती है।

-युग निर्माण योजना से साभार

प्रसन्नता एक जीवनदर्शन

- श्री ताराचन्द आहूजा

प्रसन्नता मनुष्य के लिए एक अनूठा ईश्वरीय वरदान है। यह हमें स्फूर्ति, उत्साह, उल्लास और विश्वास से भर देती है। एक प्रसन्न चेहरा खिले हुए पुष्प की भांति भीनी-भीनी सुगंध बिखेरता है। प्रसन्नता जीवन के रचनात्मक, सृजनात्मक एवं सकारात्मक दृष्टिकोण की वाहक होती है। प्रसन्नता अन्त:करण के सुखद भावों की सहज अभिव्यक्ति है। यदि मन उदारता, दया, प्रेम, क्षमा, संतोष और संवेदना से युक्त हो तो वह प्रसन्नता के रूप में सुखमंडल पर प्रतिबिम्बित हो जाती है। यह हमें प्रकृति के अद्‌भुत नजारों से भी प्राप्त हो सकती है। शीतल समीर, बहती नदी, खिलते पुष्प, चहकते पक्षी, गुंजन करते भंवरे, गगनचुंबी पर्वतों के मनोहारी दृश्य, खेत-खलिहानों में पसरी हरीतिमा आदि सभी ओर बिखरे प्राकृतिक सौन्दर्य जहां हमें सुकून प्रदान करते हैं वहीं दूसरी ओर हमारे स्वजनों, पड़ोसियों तथा मित्रों के संग भी हंसी-खुशी के पल बिताकर हम प्रसन्नता बटोर सकते हैं।

सम्पूर्ण सृष्टि में केवल मनुष्य ही ऐसा प्राणी है, जिसके पास मुस्कराने, हंसने और प्रसन्न रहने की सामर्थ्य है। प्रसन्नता वह द्वार है जहाँ से उन्नति के अनेक पथ निकलते हैं क्योंकि प्रसन्नता का कोई एक निश्चित मापदंड नहीं होता। एक डॉक्टर सफल आपरेशन करने पर, प्रसन्न होता है, वहीं एक माँ अपने नन्हें को दूध पिलाने, नहलाने तथा लोरी सुनाने में अपार आनन्द का अनुभव करती है। जहाँ एक विद्यार्थी को परीक्षा में अच्छे अंकों से सफलता प्राप्त करने पर प्रसन्नता होती है, वहीं एक छोटे बच्चे को खिलौनों से मन बहलाने में खुशी प्राप्त होती है। प्रसन्नता एक ऐसा गुण है जो न केवल व्यक्ति विशेष को ही आनंदित करता है, प्रत्युत उसके आसपास का सम्पूर्ण वातावरण भी सुहासित और प्रफुल्लित हो जाता है। तन के स्वस्थ रहने, मन के संतुलित रहने और आत्मा के परिष्कार के लिए प्रसन्नता एक टॉनिक की तरह है।

महापुरुषों का मानना है कि संसार में मुख्य रूप से पाँच प्रकार के सुख होते हैं - निरोगी काया, धन की भरमार, सुसंस्कारित भार्या, आज्ञाकारी संतान और विद्या की प्राप्ति। जिसके पास ये सब वस्तुएँ हों, उसे परम सौभाग्यशाली कहा जाता है, क्योंकि इनसे ही मन को प्रसन्नता प्राप्त होती है। पर यह कथन भी आंशिक सत्य ही है क्योंकि यदि ऐसा होता तो रावण, कंस और हिरण्यकश्यपु इस जगत् के सर्वाधिक प्रसन्न व्यक्ति होते। वस्तुत: आंतरिक प्रसन्नता का सम्बन्ध हमारी आत्मा से होता है और आत्मा किसी भी बाह्य पदार्थ की मोहताज नहीं होती। एक साधु-संत के पास भौतिक पदार्थों का सर्वथा अभाव होता है, फिर भी वह सदैव प्रसन्नचित और आनंदित रहता है। इच्छाओं की आपूर्ति के कारण मनुष्य का मन उद्विग्न हो जाता है जिससे उसकी प्रसन्नता में विघ्न पड़ता है। इसलिए कहा जाता है कि एक कामनारहित मनुष्य ही प्रसन्नता के भवन में प्रवेश पा सकता है।

प्रसन्नता सभी सद्‌गुणों की जननी है। चित्त की प्रसन्नता ही व्यवहार में उदारता को जन्म देती है। प्रसन्नचित्त व्यक्ति दीर्घायु होता है। प्रसन्नता को हम जितना बांटते हैं, वह उतनी ही अधिक मात्रा में लौटकर हमारे पास आती है। प्रसन्नचित्त व्यक्ति अपने कार्य में असफल नहीं होता। सदैव प्रसन्नचित्त रहने से अच्छे विचारों की उत्पत्ति होती है। संत-महात्मा तो यहाँ तक कहते हैं कि प्रसन्नता ईश्वर की सर्वोपरि भक्ति है जिसकी तरंगों से समूचा परिदृश्य आनन्द से सराबोर हो जाता है।

ज्ञानीजन कहते हैं कि मानवजीवन का दर्शन है प्रसन्नता और सुखीजीवन का आधार भी प्रसन्नता ही है। प्रसन्नता वरदान है तो खिन्नता अभिशाप है। प्रसन्नता एक औषधि है जो प्रतिकूल परिस्थितियों से उत्पन्न होने वाले तनाव एवं विषाद से हमें बचाती है। मानवमन की स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि सफलता और अनुकूल परिस्थितियों में वह प्रसन्न रहता है और असफलता तथा प्रतिकूल परिस्थितियों में अशान्त। गीता में भगवान् कहते हैं कि अंत:करण की प्रसन्नता होने पर व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन में दु:खों का अभाव हो जाता है और प्रसन्नचित्त रहने वाले व्यक्ति की बुद्धि शीघ्र ही सब ओर से हटकर एक परमात्मा में स्थिर हो जाती है।

प्रसन्नता के विषय में गांधी जी का कथन है - ''प्रसन्नता हमारे मन की गाँठ खोल देती है। अंत:करण से उद्‌गमित प्रसन्नता ऐसी पावन गंगा है जो सबको शीतलता प्रदान करती है। भीतर के विषाद और अवसाद प्रसन्नता के तेज झोंकों से रूई के हल्के फोहों की तरह उड़ जाते हैं।'' सुविख्यात लेखक स्वेट मार्डन का कहना है - ''जो व्यक्ति प्रसन्न स्वभाव का होता है वह निश्चय ही किसी भी कठिन कार्य को सफलतापूर्वक सम्पन्न करके संतोषप्रद परिणाम प्राप्त कर सकता है। यहाँ तक कि एक प्रसन्नचित्त व्यक्ति जीवन के अभिशाप को वरदान में बदलने की क्षमता रखता है।'' भगवान् वेदव्यास जी कहते हैं कि चित्त में प्रसन्नता का आगमन होने से मनुष्य के सब दु:ख दर्द मिट जाते हैं और प्रसन्नचित्त पुरुष की बुद्धि शीघ्र ही ईश्वर में स्थिर हो जाती है। शरीरविज्ञानियों का अभिमत है कि खिलखिला कर हंसने से मनुष्य का तन और मन दोनों स्वस्थ रहते हैं।

हंसना और प्रसन्नचित्त रहना आज के तनावग्रस्त जीवन की अनिवार्यता बन गई है। हंसने से फेफड़े मजबूत होते हैं और मन के विकार दूर होते हैं। हंसने से मन हल्का-फुल्का हो जाता है और व्यक्ति अनेक प्रकार के रोगों से मुक्ति पा लेता है। इस सम्बन्ध में 'सैटरडे रिव्यू' के संपादक नॉर्मन काजिन्स का उदाहरण हमारे सामने है। उन्होंने अपने लकवे की बीमारी से निजात पाने के लिए हास्य का अभ्यास किया जिसे 'लॉफ्टर थेरेपी' के नाम से जाना जाता है। उनका कहना है कि औषधि के साथ यदि रोगी को हास्य का टॉनिक भी मिल जाए तो रोग से शीघ्र ही छुटकारा पाया जा सकता है। यही कारण है कि आजकल हर शहर-कस्बे में हास्य-क्लब खुल गए हैं, जहाँ लोग हंसी के फव्वारे छोड़ते हुए देखे जा सकते हैं। तनाव से मुक्ति पाने के लिए हास्य चिकित्सा एक प्रभावकारी उपचार है, जिसमें कुछ भी व्यय नहीं करना पड़ता।

यह धारणा सही नहीं है कि विपन्नता, अभाव और प्रतिकूल परिस्थितियाँ मनुष्य की प्रसन्नता को हर लेती हैं। हम देखते हैं कि हमारे आस-पास ऐसे बहुत से लोग हैं जो रूखी-सूखी खाकर भी खुश रहते हैं और साथ ही ऐसे लोगों की भी कमी नहीं है जो सब प्रकार से सुविधा सम्पन्न होने के बावजूद अपने दु:खों का रोना रोते रहते हैं। प्रसन्नता और संवेदना का परस्पर गहरा और सीधा सम्बन्ध होता है। यदि मनुष्य की विचारधारा सकारात्मक है और मन संवेदनशीलता से लबालब है तो प्रसन्नता को हमारे द्वार पर आने से कोई रोक नहीं सकता। जीवन में प्रसन्नता का आगमन तब और भी सहज हो जाता है जब आदमी लोभ-लालच तथा स्वार्थपूर्ति की संकीर्ण भावनाओं से ऊपर उठ जाता है। ऐसा व्यक्ति सूफी संत बाबा शेख फरीद की इस सूक्ति पर चलता हुआ प्रसन्नतापूर्वक जीवन यापन करता है -

देख पराई चूपड़ी मत ललचावे जी।
रूखी-सूखी खा फरीदा, ठंडा पानी पी॥

जिस प्रकार दीपक जलाने से केवल अंधेरे का नाश ही नहीं होता, वरन् अंधेरा स्वयं प्रकाश बन जाता है, उसी प्रकार प्रसन्नता से दु:ख भी सुख में बदल जाता है। अत: जो भी सुखी या समृद्ध रहना चाहता है उसको प्रसन्नचित्त रहना चाहिए। प्रसन्नता कोई बाहरी वस्तु नहीं अपितु अन्त:करण की वृत्तिविशेष है, उसको जगाना मात्र मनुष्य का कर्त्तव्य है।

-निदेशक, धार्मिक पुस्तकालय, 4/114, एस. एफ. एस., अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर-302020

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

संस्कृता स्त्री पराशक्ति

!!ओ३म्!!

संस्कारवान स्त्री परमशक्ति है

कन्याओं एवं युवतियों के लिए स्वर्णिम अवसर

राष्ट्रीय कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर

स्वामी दयानन्द सरस्वती

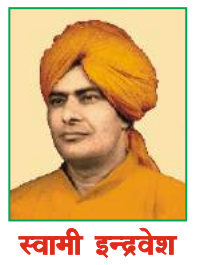

स्वामी इन्द्रवेश

दिनांक : 6 जून (वीरवार) से 12 जून (बुधवार), 2019 तक
स्थान:स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, ग्राम टिटौली, जिला–रोहतक (हरियाणा)

पाँच सौ कन्याएँ एवं युवतियाँ भाग लेंगी

शिविर के मुख्य आकर्षण

- राष्ट्रीय भावना, अनुशासन, नैतिक शिक्षा तथा परोपकार की शिक्षा दी जायेगी।
- योगासन, प्राणायाम, जूडो–कराटे आदि शारीरिक एवं आत्मरक्षा सम्बन्धी प्रशिक्षण दिया जायेगा।
- वैदिक विद्वानों व विदुषियों द्वारा संध्या, यज्ञ, आर्य संस्कृति व वैदिक सिद्धान्तों पर व्याख्यान तथा शंका समाधान किया जायेगा।
- चर्चित महिलाओं द्वारा जीवन में सफलता के गुर सिखाए जायेंगे।
- व्यक्तित्व विकास, वक्तृत्व कला एवं आत्म विश्वास के विकास का प्रशिक्षण दिया जायेगा।
- कन्या भ्रूण हत्या, दहेज आदि सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध जागरूक किया जायेगा।
- भोजन की व्यवस्था पूर्णत: नि:शुल्क रहेगी।

आवश्यक नियम व निर्देश

- शिविरार्थियों की आयु 15 वर्ष से ऊपर होनी चाहिए।
- अनुशासन का पालन आवश्यक होगा।
- कोई भी कीमती सामान व मोबाईल अपने साथ लेकर न आयें।
- ऋतु अनुकूल बिस्तर, टार्च, गणवेश (सफेद जूते व सफेद जुराब) व नित्य प्रयोग होने वाला सामान साथ लायें।
- इच्छुक युवक 100 रुपये प्रवेश शुल्क सहित अपना प्रवेश पत्र, अपने माता–पिता/अभिभावक द्वारा अनुमोदित कराकर 30 मई, 2019 तक अवश्य जमा करवायें। स्थान सीमित होने के कारण विलम्ब से आने वाले आवेदन स्वीकृत नहीं होंगे।

दानी महानुभावों से अपील

इस पांच दिवसीय विशाल शिविर के प्रबन्ध एवं भोजन प्रातराश आदि पर लाखों रुपये खर्च होने हैं, आप जैसे दानी महानुभावों के सहयोग से ही इस व्यय की पूर्ति होनी है। अत: आपसे प्रार्थना है कि राष्ट्र निर्माण के इस यज्ञ को सफल बनाने के लिए आप अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग करायें। आप यदि धनराशि के रूप में योगदान देना चाहते हैं तो समस्त क्रास चैक/बैंक ड्राफ्ट 'युवा निर्माण अभियान' के नाम से भिजवाने की कृपा करें। यदि वस्तु रूप में दान देना चाहें तो आप आटा, दाल, चावल, शुद्ध घी, रिफाइंड, दलिया, चीनी, दूध, सब्जी, मसाले आदि सामान भिजवा कर सहयोग कर सकते हैं। आपके द्वारा दिये गये दान से युवक चरित्र निर्माण रूपी पवित्र यज्ञ सफल होगा तथा आप पुण्य के भागी बनेंगे।

आयोजक

युवा निर्माण अभियान, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् एवं स्वामी इन्द्रवेश फाउण्डेशन
कार्यालय : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ टिटौली, रोहतक (हरियाणा), मो.:– 9416630916, 9354840454

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।